शहर जो चलकर गया

मैरी जेन फिनसांडो

चित्र: रेग सैंडलैंड

शहर जो चलकर गया

मैरी जेन फिनसांडो

चित्र: रेग सैंडलैंड

लेखक का एक नोट

यह कहानी है हिबिंग नाम के एक शहर की, जो मिनेसोटा के मेसाबी लोहा अयस्क रेंज के बीच में स्थित है. अपनी शुरुआत से ही हिबिंग उस लौह अयस्क पर निर्भर था जो उसके अस्तित्व के लिए ज़रूरी था. इसलिए, जब शहर के ठीक नीचे लौह अयस्क की खोज की गई, तो समाधान स्पष्ट था: शहर को स्थानांतरित करना होगा. लेकिन आप पूरे शहर को कैसे शिफ्ट करेंगे? आज भी यह काम मुश्किल होता, लेकिन 1900 की शुरुआत में, यह काम लगभग असंभव लग रहा था. लेकिन हिबिंग के लोगों ने अपने शहर को बचाने की ठानी. यह किताब बताती है कि उन्होंने असंभव को कैसे संभव बनाया.

इस कहानी में से कुछ बातें उस समय लिखे गए विभिन्न अखबारों से ली गई हैं. इसमें से कुछ हिबिंग हिस्टोरिकल म्यूज़ियम, हिबिंग लाइब्रेरी और मिनेसोटा हिस्टोरिकल म्यूज़ियम ले रिकॉर्ड से भी आई हैं. और कहानी का काफी बड़ा हिस्सा मुझे हिबिंग में रहने वाले लोगों ने बताया.
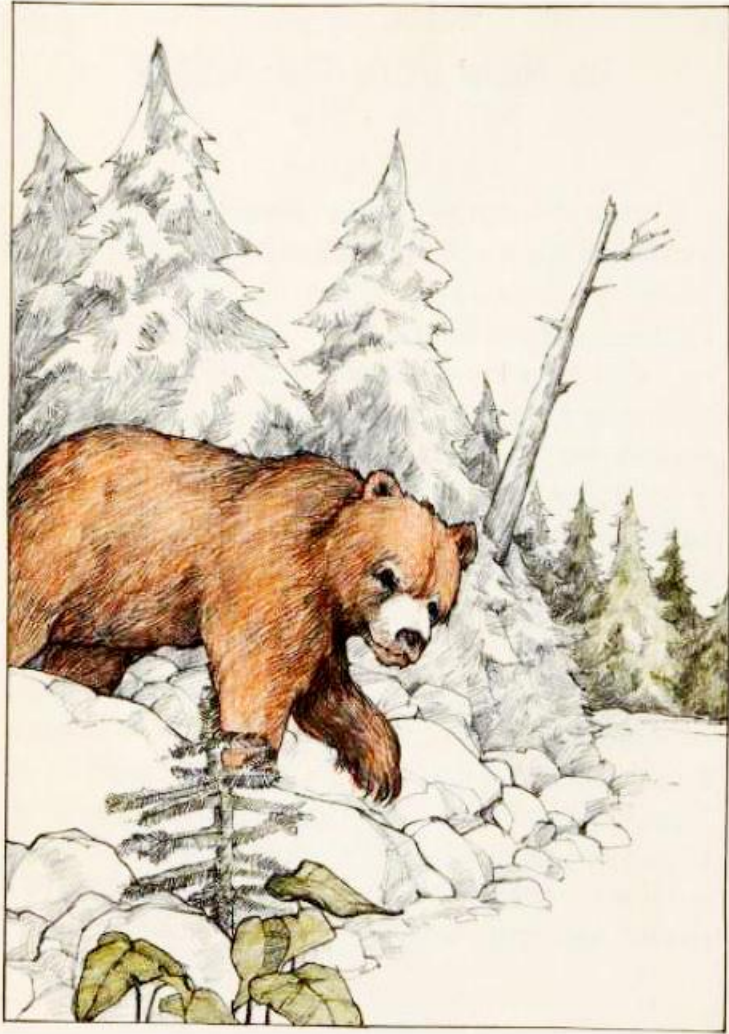
एक समय की बात है, जब संयुक्त राज्य अमेरिका अभी भी एक युवा राष्ट्र था.

तब देश का अधिकांश भाग जंगल था.

और इसलिए उत्तरी मिनेसोटा का भी वही हाल था.

वहां क्या था?

जंगल और झीलें.

भालू, हिरण और भेड़िये.

कुछ लोगों को लगा कि वहां सोना-चांदी भी मिल सकता था.

वे निश्चित नहीं थे, लेकिन वे उत्सुक थे.

इसलिए वे उन बीहड़ जंगलों में अपनी किस्मत आज़माने के लिए गए.

कुछ लोग पेड़ काटने और लकड़ी बेचने आए थे.

इनमें से कुछ लोग वहां जानवरों का शिकार करने गए.

फिर उन्होंने दूर-दूर के शहरों में, लोगों को जानवरों की खालें बेंची.

कुछ अन्य लोग वहां चाँदी या सोने की तलाश में आए.

पर उन्हें उत्तरी मिनेसोटा में वे चीज़ें नहीं मिलीं.

और वहां उनका जीवन आसान नहीं था!

वहां शहर नहीं थे.

सड़कें नहीं थीं.

सर्दियाँ, लंबी और ठंडी होती थीं.

वो जगह अपने परिवार को लाने के लिए ठीक जगह नहीं थी.

इसलिए वहां सिर्फ पुरुष ही गए.

फिर, 1891 के अगस्त में, जंगल में एक चक्रवात आया.

बहुत तेज़ हवाएं चलीं.

उन्होंने अनेक बड़े-बड़े वृक्षों को उखाड़ दिया.

उखड़े हुए पेड़ों की जड़ों के नीचे लोगों को लौह अयस्क दिखाई दिया!

उत्तरी मिनेसोटा में सोना-चांदी भले ही न मिला हो, लेकिन 1800 के दशक में लौह अयस्क की खोज लगभग उतनी ही रोमांचक थी.

लौह अयस्क वो पत्थर होता है जिनसे हमें लोहा मिलता है, और 1800 के दशक में रेलगाड़ियों और पटरियों के निर्माण के लिए स्टील की सख्त जरूरत थी.

जल्द ही मिनेसोटा में लौह अयस्क की खोज, खबर पूरे देश में फैल गई.

उसके बाद मिनेसोटा में आने वाले लोगों की भीड़ लग गई.

कुछ लोग वहां लौह अयस्क की खदानें शुरू करने आए.

उन आदमियों में से एक का नाम फ्रैंक हिबिंग था.

फ्रैंक हिबिंग को पता था कि अगर उसने लौह अयस्क की खान शुरू की तो उसे काम करने के लिए बहुत से लोगों की ज़रूरत होगी.

और जो लोग वहां काम करने आएंगे वे अपने परिवारों को भी साथ लाना चाहेंगे.

इसलिए, हिबिंग ने एक नया शहर बनाने का फैसला किया.

सबसे पहले उसने जमीन खरीदी.

फिर उसने सड़क बनाने के लिए लोगों को काम पर रखा.

उसने परिवारों के लिए लॉग केबिन बनाने के लिए अन्य लोगों को काम पर रखा.

जल्द ही पूरे देश से लोग हिबिंग की खदान में काम करने और उसके शहर में रहने के लिए आने लगे.

वे लोग आयरलैंड, स्वीडन और जर्मनी जैसे दूर देशों से भी आए.

कई लोग वहां खदान में काम करने आए, लेकिन कुछ लोग वहां दुकानें खोलने आए.

जल्द ही वहां पर स्कूल, चर्च और बैंक भी खुल गए.

15 अगस्त, 1893 को, लोगों ने हिबिंग, मिनेसोटा को, एक शहर बनाने के लिए अपना मतदान किया.

हिबिंग अपने समृद्ध लौह अयस्क के लिए प्रसिद्ध हो गया.

शहर बढ़ता गया और बढ़ता गया.

वहां रहने वाले सभी लोगों को अपने शहर हिबिंग पर बहुत गर्व था.

वे उसे एक सुंदर शहर बनाना चाहते थे.

उन्होंने फैंसी थिएटर, प्यारे पार्क और बढ़िया घर बनाए.

उन्होंने अपने बच्चों के लिए उत्कृष्ट स्कूल शुरू किए, और उन्होंने अपने शहर की अच्छी देखभाल की.

फिर एक दिन खदान मालिकों ने एक और खोज की:

सबसे अच्छा लौह अयस्क ठीक उनके शहर हिबिंग के बिल्कुल नीचे था!

अब हिबिंग के लोगों को शहर छोड़कर जाना होगा.

ऐसा नहीं करने पर खदानों को बंद करना होगा.

और फिर खदान मज़दूर काम से बेरोज़गार हो जायेंगे.

उनके साथ-साथ अन्य व्यवसाय भी बंद हो जायेंगे.
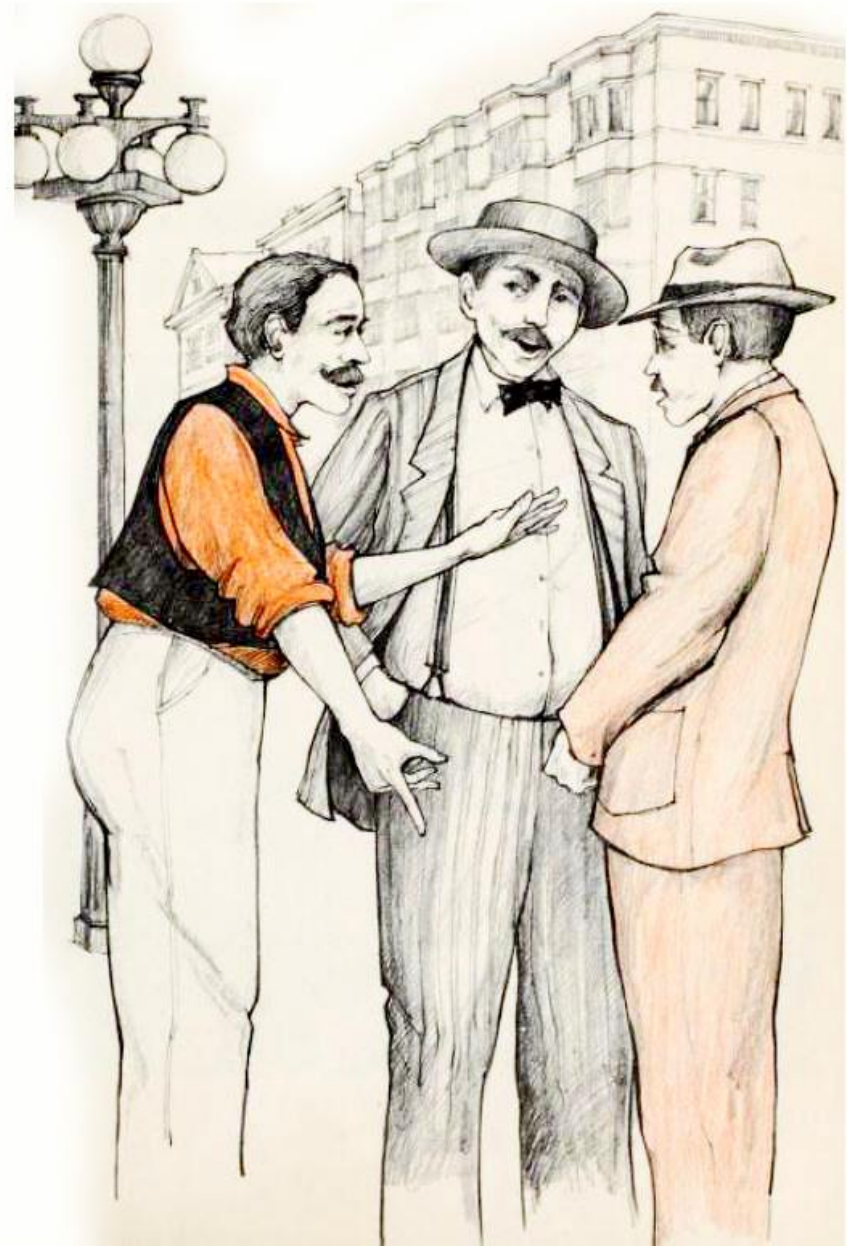
इस खबर से हिबिंग के लोग बहुत परेशान हुए.

उन्होंने अपने खूबसूरत शहर के निर्माण के लिए बहुत मेहनत की थी.

वे भला उसे कैसे छोड़ सकते थे?

नई खदानों के लिए रास्ता बनाने के लिए वे अपने प्यारे शहर को टूटते हुए कैसे देख सकते थे?
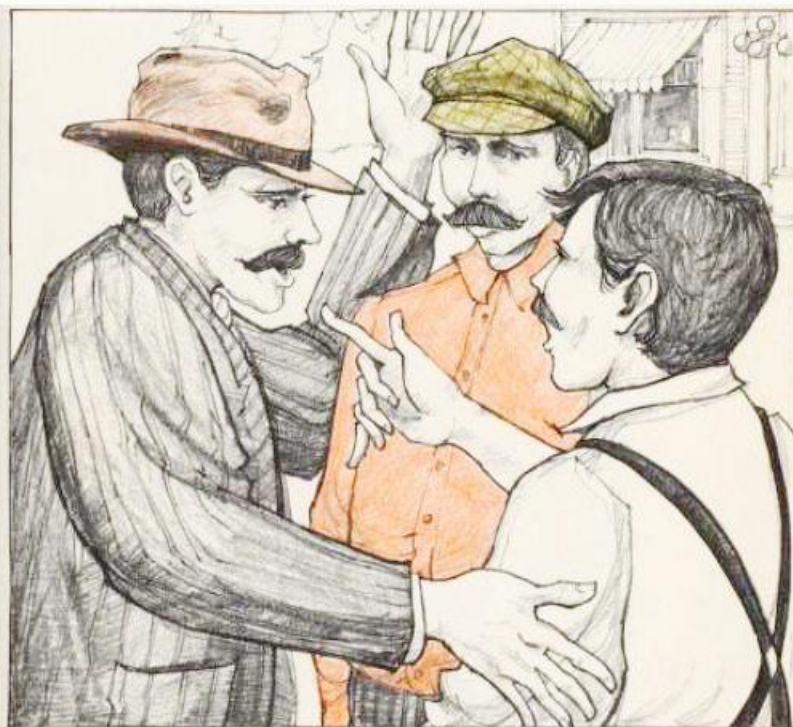
"हम कहाँ जाएं?" लोगों ने पूछा.

"हम आप लोगों के लिए एक नया शहर बनाएंगे," खदान मालिकों ने कहा.

"लेकिन फिर हमारे अच्छे घरों, फैंसी थिएटरों और हमारे खूबसूरत होटलों का क्या होगा?" लोगों ने पूछा.

खदान मालिकों ने सोचा और सोचा, और आखिरकार वे एक समाधान लेकर आए.

"हम आपके घरों को स्थानांतरित यानि शिफ्ट करेंगे!" उन्होंने कहा.

"हम पूरे शहर को शिफ्ट करेंगे!"

यह लोगों को एक अद्‌भुत विचार लगा.

वो भला पूरे शहर को शिफ्ट कैसे करते?
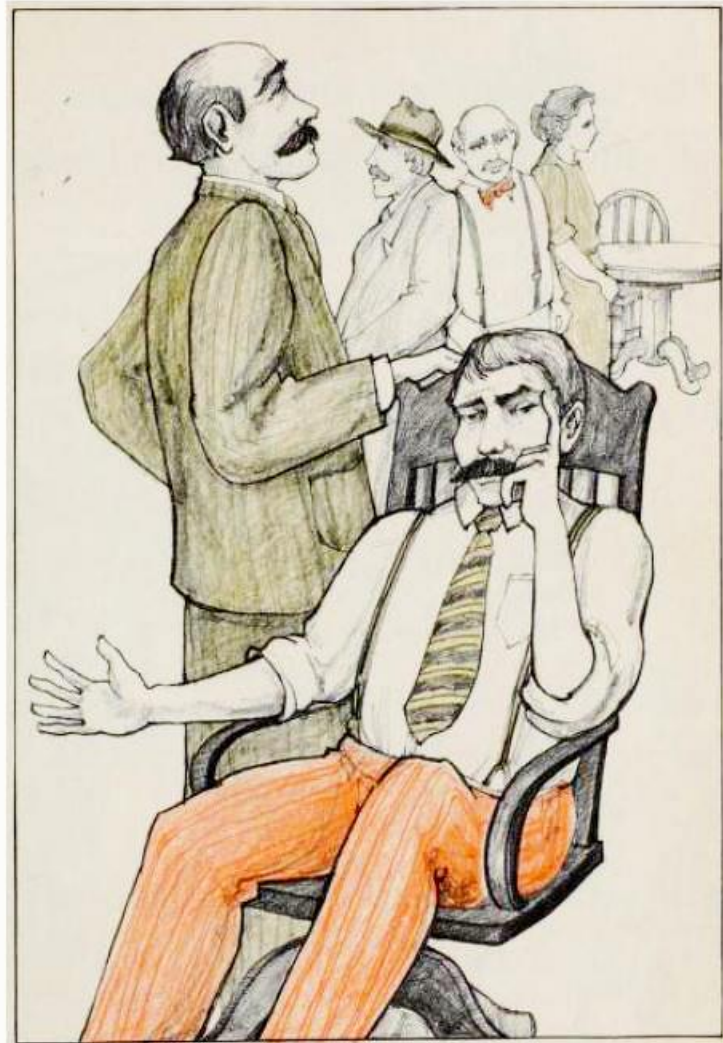
खदान मालिकों और लोगों ने एक साथ बैठकर चर्चा की.

"हमारे पास घोड़े और ट्रैक्टर हैं," एक आदमी ने कहा.

"उनसे शायद हम इमारतों को खींच सकें."

"लेकिन हम जमीन पर बड़ी इमारतों को नहीं खींच पाएंगे," मेयर ने कहा.

"तब इमारतों के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे. हमें पहिए और कुछ अन्य चाहिए होगा."

"पहिए, एक समस्या हैं," खदान मालिकों ने कहा.

"हमारे अधिकांश पहिए इतने बड़े या इतने मजबूत नहीं हैं कि वे किसी इमारत को हिला सकें."

"ठीक है," किसी और ने कहा, "हमारे पास निश्चित रूप से बहुत सारे पेड़ हैं. हम उन्हें काट सकते थे, फिर उनके तनों को चिकना करके अपने घरों को उन पर रोल कर सकते थे."

"बहुत सुन्दर हल है!" हर कोई ख़ुशी से चिल्लाया.

उसके बाद खदान मालिक और लोग शिफ्टिंग की तैयारी में लग गए.

उन्होंने सभी इमारतों को उनके तहखानों से अलग किया.

फिर उन्होंने सभी इमारतों के लिए नए तहखाने खोदे.

उन्होंने पेड़ों को काटा.

उन्होंने पेड़ों की शाखाओं को काटा.

उसके बाद उन्होंने लट्ठों को चिकना बनाया.
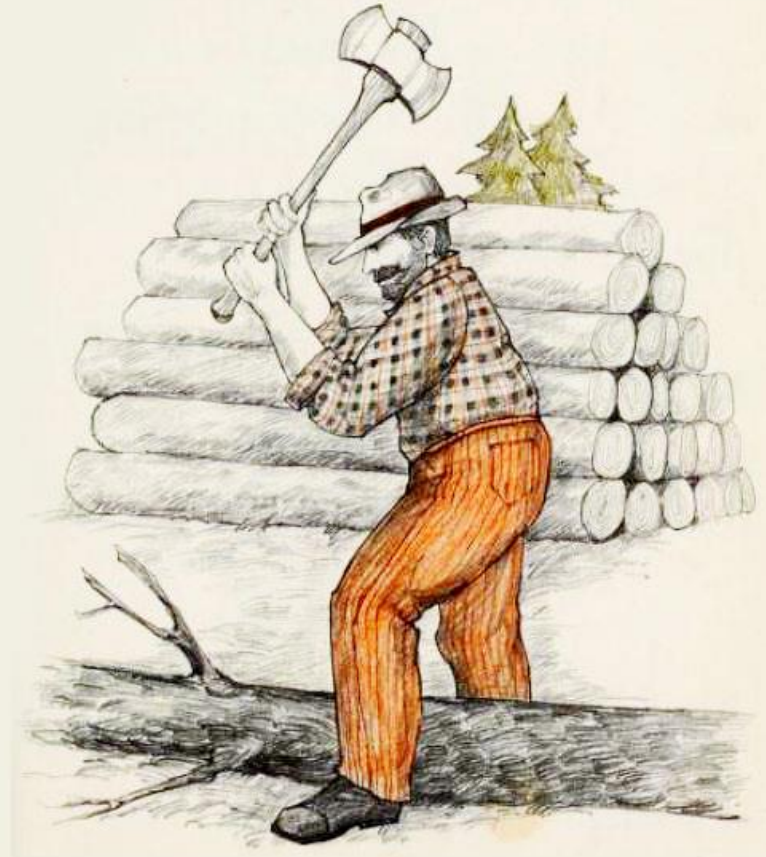
दुनिया भर में लोगों ने हिबिंग के स्थानांतरित होने की योजना के बारे में सुना.

"असंभव!" तमाम लोगों ने कहा.

शहर के एक बड़े अखबार ने लिखा:

"हिबिंग के लोग पागल हो गए हैं!"

किसी को भी विश्वास नहीं था कि हिबिंग के लोग अपने पूरे शहर को स्थानांतरित कर पाएंगे.
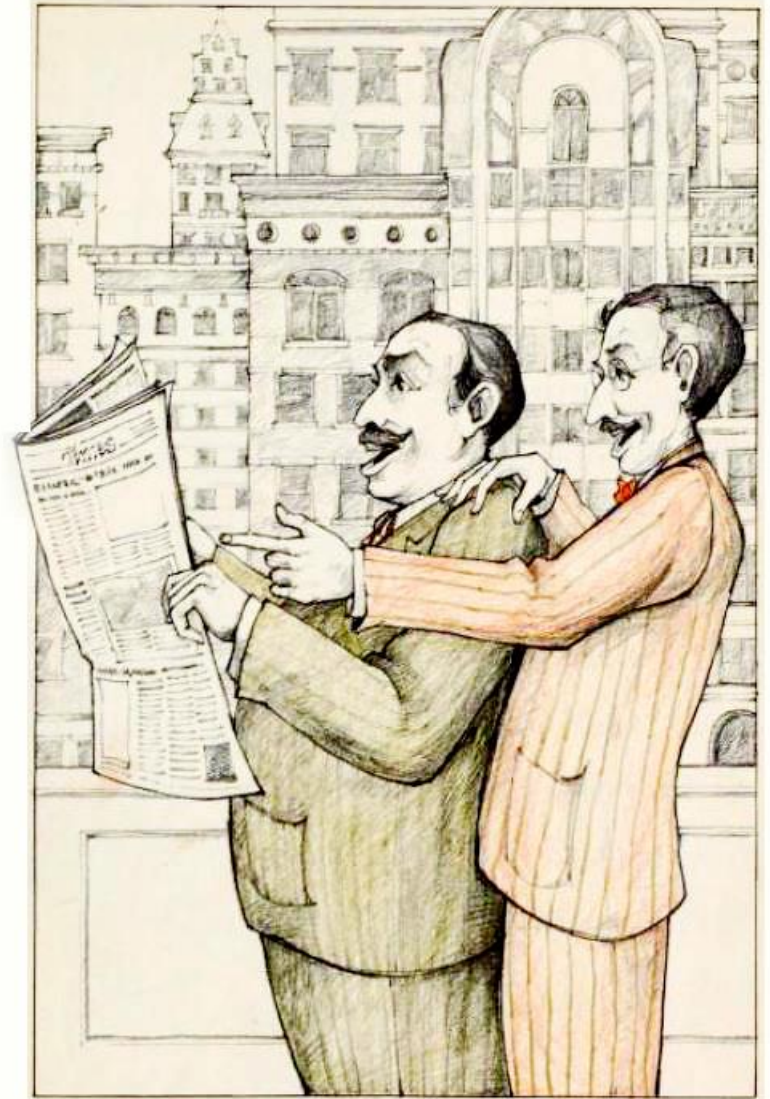
अंत में घरों को शिफ्ट करने वाला दिन आया.

हिबिंग होटल, शिफ्ट होने वाली पहली इमारत होगी.

खनिकों ने खदान की क्रेन से बड़ी-बड़ी जंजीरें और रस्सियाँ बांधीं.

क्रेनों को भाप इंजन द्वारा चलाया गया.

फिर जंजीरों को, हिबिंग होटल के ऊपर-नीचे लपेटा गया.

धीरे-धीरे क्रेनों ने होटल को हवा में थोड़ा ऊपर उठाया.

फिर उन्होंने होटल को घुमाकर उसे पेड़ों के तनों से बने रोलरों पर धीरे से रख दिया.
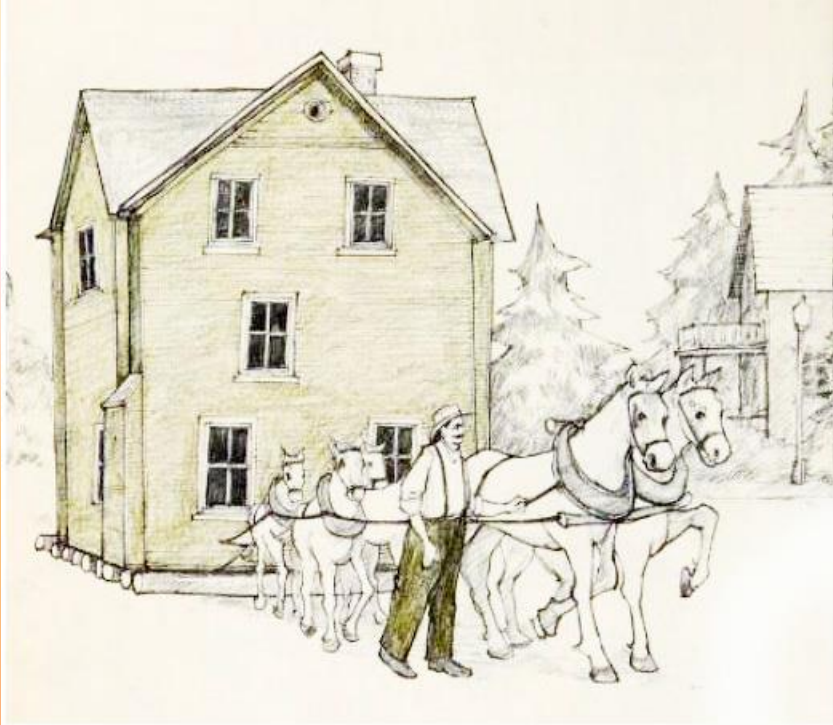
उसके बाद रस्सियों और ज़ंजीरों को होटल के चारों ओर लपेटा गया और फिर उन्हें सामने के घोड़ों से जोड़ा गया.

“चलो! आगे बढ़ो!" घोड़ों के चालक चिल्लाए.

घोड़े आगे बढ़ने लगे.

धीरे-धीरे हिबिंग होटल गली में लुढ़कने लगा.

बिल्डिंग के नीचे से जैसे ही पिछला लट्ठा निकलता, लोगों ने उसे पकड़कर उठा लेते.

फिर वे उस लट्ठे को घोड़े से बांधकर बिल्डिंग के आगे खींचकर ले जाते.

फिर वे लट्ठे को दुबारा बिल्डिंग के नीचे सरका देते.
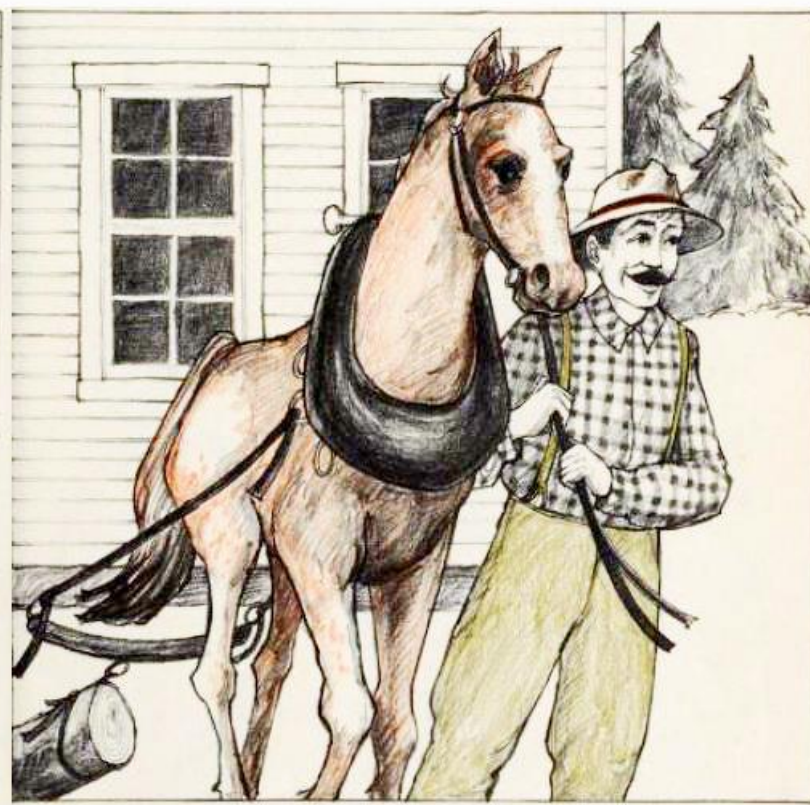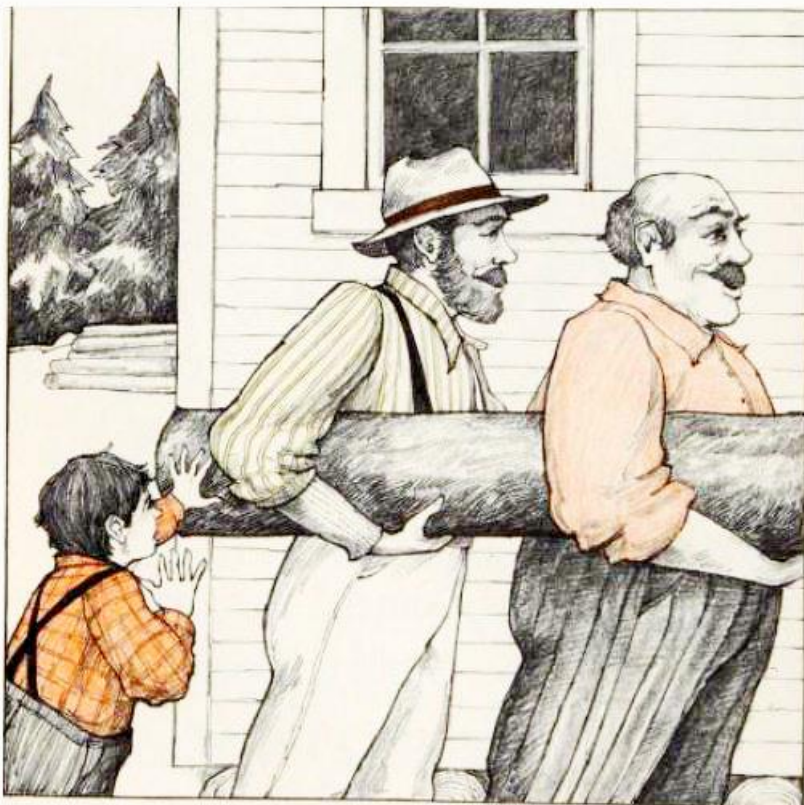
हिबिंग होटल को शिफ्ट करने के बाद, उन्होंने ओलिवर क्लब-हाउस को शिफ्ट किया.

ओलिवर इतना बड़ा था कि उसे हिलाने के लिए पहले उसे दो भागों में काटना पड़ा.

सड़क पर इमारतें अपने नए स्थानों पर लुढ़ककर गईं.

हर दिन हिबिंग के लोगों ने, अपने खूबसूरत शहर को बचाने के लिए काम किया.

अंत में सभी व्यावसायिक भवनों को स्थानांतरित कर दिया गया.

उसके बाद रिहायशी घरों की बारी आई.

"हमें अपने फर्नीचर का क्या करें?" महिलाओं ने पूछा.

"और हम अपने खिलौनों और कपड़ों का क्या करें?" बच्चों ने पूछा.

"आप सभी चीज़ों को घरों में ही रहने दें," उन्हें बताया गया. "और अगर आप चाहें तो आप खुद भी अपने घर में सवारी कर सकते हैं."

अगले ही दिन पहले घर को, लट्ठों पर उठाकर रखा गया.

घर धीरे-धीरे करके गली के नीचे लुढ़ककर आया.

सामने एक पेड़ का तना रखा गया. फिर घर के पीछे वाला तना बाहर निकाला गया.

उस तने को सामने रखा गया, और फिर पीछे वाले तने को आगे लाकर रखा गया.

और यह सिलसिला चलता रहा और अंत में सभी 186 घरों को, एक-के-बाद-एक करके शिफ्ट दिया गया.

हिबिंग के लोगों ने सफलतापूर्वक अपने शहर को शिफ्ट किया था!

उन्हें अपने काम पर गर्व था!

अंत के शब्द

हिबिंग के शिफ्टिंग का काम वर्ष 1912 में शुरू हुआ, लेकिन अधिकांश इमारतों को 1920 के दशक में ही शिफ्ट किया गया. 1953 के पतझड़ में ही आखिरी इमारत को शिफ्ट किया गया.

हिबिंग के लोगों ने अपने शहर को इसलिए शिफ्ट किया क्योंकि वे अपने शहर से प्यार करते थे. कई साल बाद तक उन्हें यह पता नहीं था कि उन्होंने एक नया इतिहास रचा था. यदि आज आप हिबिंग जाएँ तो आप उन कई इमारतों को देख पाएंगे जो तनों पर लुढ़काकर वहां शिफ्ट की गईं थीं और जो आज भी वहाँ खड़ी हैं. और लोग अभी भी यह कहते हुए गर्व महसूस करते हैं, "हम हिबिंग से हैं. उस शहर से जिसे शिफ्ट किया गया था!"